SWAMAAN / SANKALP / SLOGAN: SWAROOP BANO

September 03, 2013

हम चैतन्य आत्माएँ, पुरुषोत्तम संगम युग में ईश्वरीय गोद में बैठ दिल से सदा दिलाराम की लगन में मगन रहकर रूहानी मंगल मिलन मनानेवाले, सच्चे तपस्वी हैं...

We, the souls, the living beings sitting in God's lap in the auspicious confluence age, constantly keeping our heart absorbed in the love of the Comforter of Hearts and celebrating an auspicious spiritual meeting, are true tapasvis...

Hum chaitany atmaayen, purushottam sangam yug men ishwariy god men baith Dil se sada dilaram ki lagan men magan rahkar ruhaani mangal Milan manaanewale sachche tapasvi hain...

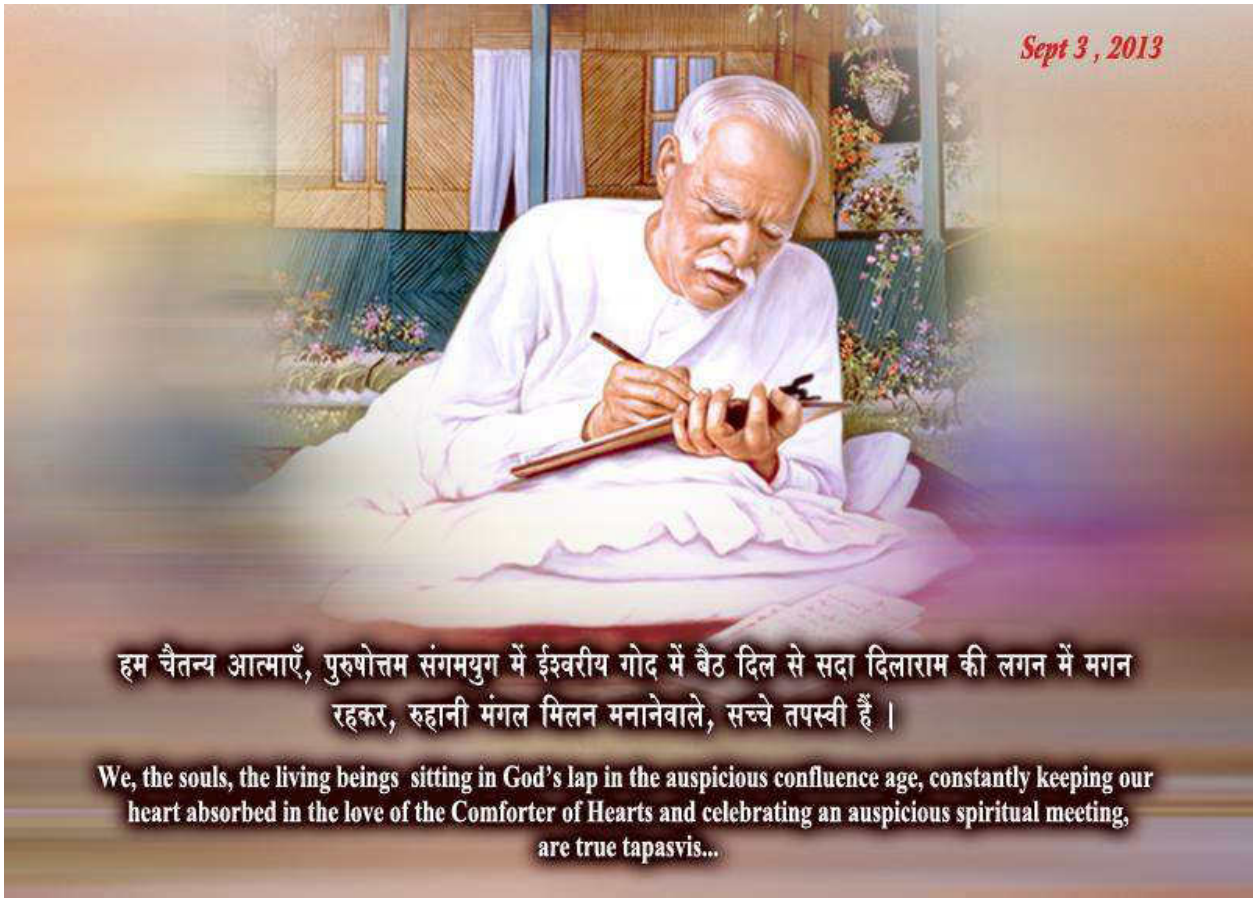

Om Shanti Divine Angels!!!

Points to Churn: September 03, 2013

Praise of the Father: The Supreme Father, the Supreme Soul...the Ocean of Knowledge...the Benefactor...the One who grants Salvation to all...the Comforter of Hearts...

Knowledge: The confluence age is the age to celebrate an auspicious meeting personally with God, This is the highest on high Godly Kumbh mela, the meeting of the souls, the living beings, with the Supreme Soul.

This is your very small Godly clan. Shiv Baba is the grandfather, Brahma is the Father and you are the children, all brothers and sisters. Brahma is Shiva's child, and you are Brahma's children.

The Father first gives health, and then wealth; first peace and then happiness. No one else can grant salvation. This is called the unlimited liberation and the unlimited liberation-in-life.
This is the biggest place of pilgrimage. This is where the living Shiv Baba is the Ocean and you souls are Ganges. This is the biggest mela of the path of knowledge, and it meets only once. The meeting of the Ocean of Knowledge and the Brahmaputra is there anyway.

Yoga: Chase away the evil spirits through remembrance of the Father. Continue to celebrate an auspicious meeting with the Father. Constantly let your heart be connected to the one Comforter of Hearts. This is true tapasya.

Dharna: Become buds from thorns and then flowers from buds. Remain pure while living in a household. Your stage should be like that of the deities. There should be no vices. Remove the evil spirits. Become worthy of marrying Laxmi or Narayan and become worthy of going to heaven. Check the defects within yourself and remove them. Beware of the influence of bad company. Imbibe divine virtues and make yourself worthy.

Service: Do the service of making every household heaven. Give the aim of becoming pure from impure to everyone. Make everyone worthy of heaven. Make unconscious ones conscious with the life-giving herb. Make everyone victorious. Remain busy in the task of benefitting yourself and the world and make the atmosphere one where all obstacles are destroyed.

Pointsof Self Respect: Ganges...Mahavirs...powerful...victorious...destroyers of obstacles...world benefactors...true Brahmins...mouth-born creations of Brahma...

ॐ शान्ति दिव्य फरिश्ते !!!

विचार सागर मंथन: September 03, 2013

बाबा की महिमा : परमपिता परमात्मा... ज्ञान सागर... कल्याणकारी... सबको सद्गति देने वाला... दिलाराम...

ज्ञान : संगमयुग है ईश्वर से सम्मुख रूहानी मंगल-मिलन मनाने का युग । यह है चैतन्य आत्माओं और परमात्मा का संगम, ईश्वरीय ऊँच ते ऊँच कुम्भ का मेला।

तुम्हारा यह बहुत छोटा सा ईश्वरीय कुल है, शिवबाबा है दादा, ब्रह्मा है बाबा और तुम बच्चे हो, भाई-बहिन। यह शिव का बच्चा ब्रह्मा, ब्रह्मा के बच्चे तुम ।

बाप आकर पहले हेल्थ, पीछे वेल्थ देते हैं । पहले शान्ति फिर सुख । मुक्ति दूसरा कोई तो दे नहीं सकता । इसको बेहद की मुक्ति, बेहद की जीवन्मुक्ति कहा जाता है।

यह बड़े ते बड़ा चैतन्य तीर्थ है । जहाँ चैतन्य शिवबाबा सागर है, वहाँ तुम आत्मायें गंगायें हो । यह सबसे बड़ा ज्ञान मार्ग का मेला एक ही बार लगता है । ज्ञान सागर इस ब्रह्मपुत्रा नदी के साथ चलते हैं ।

योग : भूतों को बाप की याद से भगाना है 1 बाप के साथ मंगल मिलन मनाते रहना है 1 दिल सदा दिलाराम में लगी रहे - यह सच्ची तपस्या है ।

धारणा : कांटो से कलियां फिर कलियों से फूल बनना हैं । घर में पवित्र होकर रहना है । अवस्था ऐसी होनी चाहिये जैसे देवताओं की होती है । कोई भी अवगुण नहीं होना चाहिए । भूतों को निकालने है । लक्ष्मी अथवा नारायण को वरने लायक, स्वर्ग में चलने लायक बनना है।

अन्दर के अवगुणों की जाँच कर उन्हें निकलना है 1 संगदोष से अपनी सम्भाल करनी है 1 देवताई गुण धारण कर स्वयं को लायक बनाना है 1

सेवा : घर-घर को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है 1 सबको पतित से पावन होने का लक्ष्य देना है 1 हर एक को स्वर्ग के लायक बनाना, भूतों को बाप की याद से भगाना है 1 बाप के साथ मंगल मिलन मनाते रहना है 1 याद से ही पतितों को पावन बनाना है । उन पुजारियों ब्राह्मणों को ज्ञान देना है । संजीवनी बूटी द्वारा मूर्छित को सुरजीत बनाना है । सबको विजयी बनाना है । स्व कल्याण अथवा विश्व कल्याण के कार्य में बिजी रह विघ्न-विनाशक वायुमण्डल बनाना है ।

स्वमान: गंगायें... महावीर... शक्तिवान... विजयी... विघ्न-विनाशक... विश्व कल्याणकारी... सच्चे-सच्चे ब्राह्मण... ब्रह्मा मुख वंशावली...

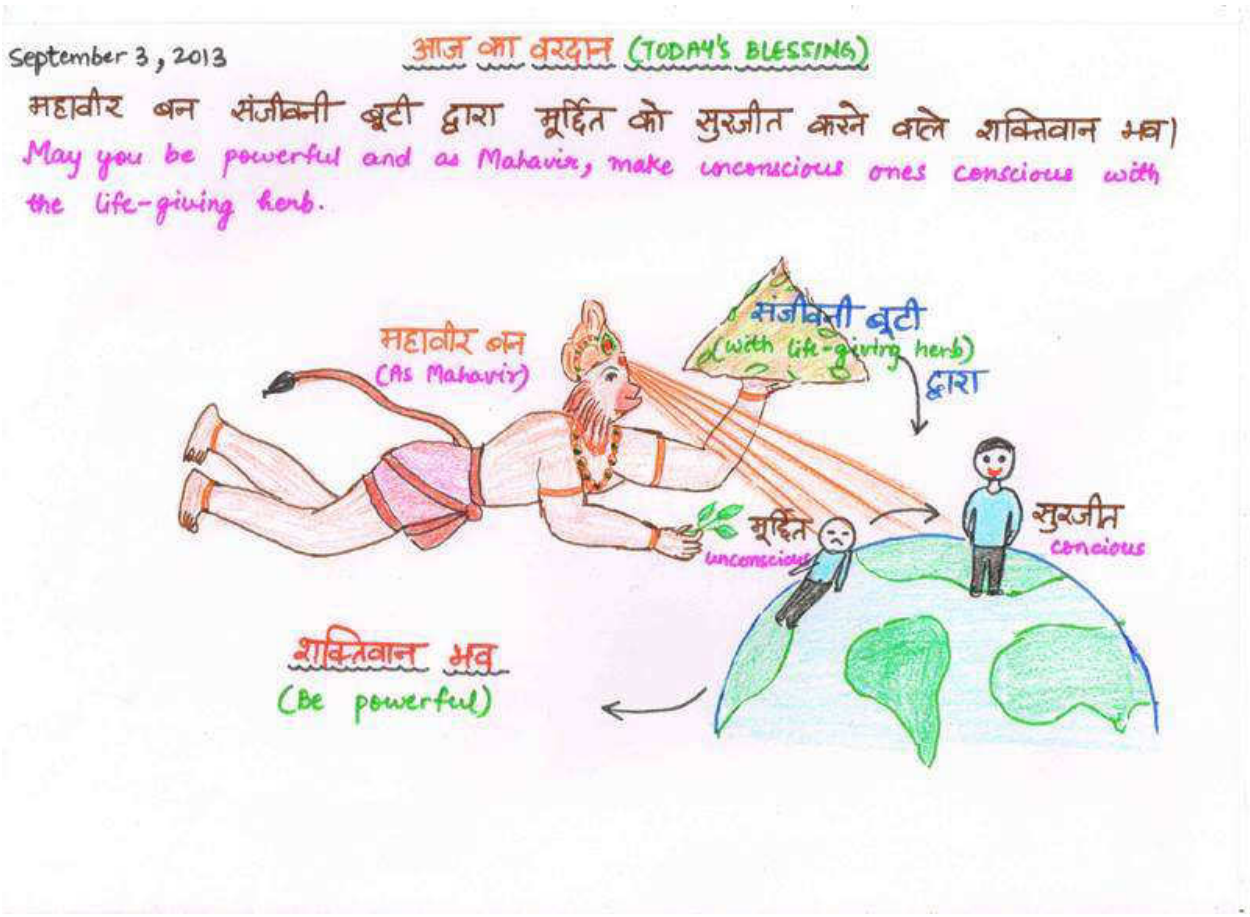

Song: Nai umar ki kaliyaan... नइ उमर कि कलियाँ ...the buds of the new age... nai umar ki kaliyaan tumko dekh rahi duniya saari tumpe badi jimmedaari, ghar ghar ko swarg banana har angaan ko phoolwari

http://www.youtube.com/watch?v=ICpWUIV-GjY&feature=youtu.be

03-09-2013:

Essence: Sweet children, you have the responsibility of making every home into heaven. Give everyone the aim of becoming pure from impure. Imbibe divine virtues.

Question: What do you children experience by coming into God's lap?

Answer: Children who come into God's lap experience the celebration of an auspicious meeting. (mangal Milan) You know that the confluence age is the age to celebrate a meeting with God. You celebrate a meeting with God and make Bharat into heaven. You children meet God personally at this time. Throughout the whole cycle, no one else can ever celebrate a personal meeting. This is your very small Godly clan. Shiv Baba is the Grandfather and Brahma is the father and you children are brothers and sisters. There are no other relationships.

Song: The buds of the new age. (nai umar ki kaliyaan, tumko dekh rahi duniya, saari tumpe badi jimmedaari, ghar ghar ko swarg banana har angaan ko phoolwari)

Essence for dharna:

1. Check the defects within yourself and remove them. Beware of the influence of bad company. Imbibe divine virtues and make yourself worthy.
2. Serve to make every home into heaven. Chase away the evil spirits through remembrance of the Father. Continue to celebrate an auspicious meeting with the Father.

Blessing: May you be powerful and as Mahavir, make unconscious ones conscious with the life-giving herb.

The sun is powerful and so, with its power, spreads light everywhere. Become powerful in the same way and continue to make all of those who are unconscious conscious with the life-giving herb and you will then be said to be Mahavir. Constantly have the awareness that you have to remain victorious and make everyone victorious. The way to become victorious is to remain busy. Remain busy in the task of benefitting yourself and the world and the atmosphere will then continue to become one where all obstacles are destroyed.

Slogan: Constantly let your heart be connected to the one Comforter of Hearts This is true tapasya.

03-09-2013:

सार:- "मीठे बच्चे – घर-घर को स्वर्ग बनाने की जिम्मेवारी तुम बच्चों पर है, सबको पतित से पावन होने का लक्ष्य देना है, दैवीगुण धारण करने हैं"

प्रश्न:- ईश्वरीय गोद में आने से तुम बच्चों को कौन सा अनुभव होता है ?

उत्तर:- मंगल मिलन मनाने का अनुभव ईश्वरीय गोद में आने वाले बच्चों को होता है। तुम जानते हो संगमयुग है ईश्वर से मिलन मनाने का युग। तुम ईश्वर से मिलन मनाकर भारत को स्वर्ग बना देते हो। इस समय तुम बच्चे सम्मुख मिलते हो। सारा कल्प कोई भी सम्मुख मिलन नहीं मन सकते। तुम्हारा यह बहुत छोटा सा ईश्वरीय कुल है, शिवबाबा है दादा, ब्रह्मा है बाबा और तुम बच्चे हो, भाई-बहिन, दूसरा कोई सम्बन्ध नहीं।

गीत:- नई उमर की कलियां....

धारणा के लिए मुख्य सार:-

1) अन्दर के अवगुणों की जाँच कर उन्हें निकलना है। संगदोष से अपनी सम्भाल करनी है। देवताई गुण धारण कर स्वयं को लायक बनाना है।
2) घर-घर को स्वर्ग बनाने की सेवा करनी है। भूतों को बाप की याद से भगाना है। बाप के साथ मंगल मिलन मनाते रहना है।

वरदान:- महावीर बन संजीवनी बूटी द्वारा मूर्छित को सुरजीत करने वाले शक्तिवान भव

जैसे सूर्य स्वयं शक्तिशाली है तो चारों ओर अपनी शक्ति से प्रकाश फैलता है, ऐसे शक्तिवान बन अनेकों को संजीवनी बूटी देकर मूर्छित को सुरजीत बनाने की सेवा करते रहो, तब कहेंगे महावीर। सदा स्मृति रखो कि हमें विजयी रहना है और सबको विजयी बनाना है। विजयी बनने का साधन है बिजी रहना। स्व कल्याण अथवा विश्व कल्याण के कार्य में बिजी रहो तो विघ्न-विनाशक वायुमण्डल बनता जायेगा।

स्लोगन:- दिल सदा दिलाराम में लगी रहे – यह सच्ची तपस्या है।